खुँखर माता मन्दिर

सम्वत ११३९ ई. मे तोषीणा (प्राचीन नाम थल) गाँव में खुँखर माताजी का भव्य-मन्दिर था । सेठ तोषाशाह तोषनीवालजी के आने से इस गाँव का नाम तोषीणा पड़ा । किसी अज्ञात आपदाओं के कारण से यह भव्य मन्दिर जीर्ण-शीर्ण अवस्था में बदल कर पृथ्वी में समा गया । समय-समय पर यहाँ तोतला, तोषनीवाल (माहेश्वरी) आते रहे और उस स्थान पर (जमीन पर) ही माताजी की पूजा-अर्चना करते रहे । माताजी की असीम अनुकम्पा से श्रीमती प्रभादेवी धर्मपत्नी श्री भगवानदासजी तोतला, जलगाँव (महाराष्ट्र) निवासी को माता ने सपने में दर्शन देकर मन्दिर बनवाने की बात कही । बार-बार स्वप्न में आने पर जैसे-तैसे १९९२ में वो इस स्थान पर पहूँचे ।

यहाँ पहुँच कर ग्रामीणों की सहायता से उन्होंने प्राचीन मन्दिर वाले स्थान की खुदाई करवाई, जहां प्राचीन मन्दिर के अवशेष प्राप्त हुए । लेकिन भगवती खुँखर माता की वो प्राचीन प्रतिमा प्राप्त नहीं हुई । माताजी की यही कृपा समझकर उस स्थान पर नया भव्य मन्दिर बनाकर २५ जनवरी १९९८ ई.में इस नये मन्दिर में माताजी की स्थापना कर दी गयी । मंदिर परिसर ५ बिघा १३ बिसवा जमीन पर फैला हुआ हैं। यहाँ भक्तो के ठहरने के लिए भव्य भक्त निवास का निर्माण किया गया है जिस मे १६ सुसुज्जित कमरे तथा भव्य सभागृह है, साथ ही भोजन पाकशाला तथा ५०० भक्तो के भोजन के लिय भोजन कक्ष निर्माण किया गया है। आनेवाले यात्रियों की ठहरने की तथा पुर्वजानकारीनुसार भोजन की व्यवस्था भी उपलब्ध है। मंदिर का भव्य प्रवेश द्वार निर्माण तथा सुरक्षा हेतु सि. सि. टि. व्हि. कॅमेरे लगाये गये है। परिसर वृक्ष तथा फुल-पौधों से सुशोभित किया है। यहाँ दोनों नवरात्रों में मेले का माहौल रहता है । प्रतिवर्ष माघ कृष्ण १२ को यहाँ वार्षिक उत्सव मनाया जाता है । नवरात्री पर्व पर दूर-दराज से पधारे हजारों भक्त यहाँ मैया के दर्शन

सेठ तोषाशाह तोषनीवालजी

कुल माता खुँखरजी के मंदिर निर्माण के शिल्पकार...

कुल माता की असिम कृपा एवं जिनकी अटूट -श्रद्धा, दृढ -विश्वास तथा पुर्ण-समर्पित भाव से माताजी का भव्य मंदिर साकार हो पाया ऐसे जलगांव निवासी हमारे आदरणिय भाई साहब एवं सौ. भाभीजी

श्री भगवानदासजी सुपडूरामजी तोतला
सौ. प्रभादेवी भगवानदासजी तोतला

लेखक ...

माँ भगवती खुँखर माता व राधा कृष्ण भगवान की अनुकम्पा से मैने आप सभी भक्तों की आशा व जिज्ञासा के अनुरुप खुँखर माता चालीसा, आरती तथा स्तुति का लेखन किया है ।

जो आपके हृदय में ज्ञान की ज्योति जलाकर, कल्याण रुपी मार्ग पर अग्रसर करें । इसी आशा के साथ,

जय माता दी ।

प्रदीप दाधीच 'दीप'
९९८२५६५८६७
Email : pradeepdadhich79@gamil.com

पाठ विधी

प्रभातकाल में सूर्योदय होने से थोड़ा पूर्व सच्चे मन से प्रभु को याद करते हुए नित्य कर्मो से निपटकर शुद्ध वस्त्र पहनकर माँ भगवती खुँखर की मूर्ति या तस्वीर (प्रतिमा) सामने रखे ।

सिन्दुर, पान, सुपारी, नारियल लेकर माता की मुर्ति के सामने बैठकर निचे लिखा श्लोक पढ़े ।

ॐ सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते ।।

श्लोक पूर्ण होने पर फूल अर्पण करके माँ को सिन्दूर का तिलक लगावें

।। माँ खुँखर चालीसा ।।

दोहा

गुरू गणेश सुमिरण करू, धरू मात को ध्यान ।
चरणा शीश नवाव के, इष्ठ देव भगवान ।।
खुँखर माँ थारी कृपा सु, लिखु चालीसों आज ।
दौ हजार अड्सठ संवत् पौष अष्टमी मास ।।

चौपाई

जय जगदम्बा तुम महाराणी, तुम ही तो हो माँ कल्याणी । ।। १ ।।
अम्बा–कमला अरू ब्रह्माणी, जय–जय–जय हो मात भवानी । ।। २ ।।
आदि शक्ति अनन्त अविनाशी, तेज–नयन–अरविन्द लता सी । ।। ३ ।।
शार्दुल की असवारी सोहे, भक्तों को माँ मनडो मोह । ।। ४ ।।
कानन कुण्डल कर तलवारी, गल में माला तन पे सारी । ।। ५ ।।
नयन सुरमो चन्द उजियारी, खुँखर माँ की छवि अति प्यारी । ।। ६ ।।

नाक नथनीयाँ सोहे प्यारी, गल पुष्पन की माला वारी । ।। ७ ।।
कनक ताज मस्तक पर साजे, माँ के द्वारे नौपत बाजे । ।। ८ ।।
शक्ति–सती–मातृ–महतारी, चारों जुग महिमा उजियारी । ।। ९ ।।
उदयकाल रवि मण्डल की–सी, शोभा धारी रही जगदीसी । ।। १० ।।
अन्नपूर्णा–मनसा राणी, कलयुग की खुँखर महाराणी । ।। ११ ।।
नवदुर्गा के रूप कहावे, भेरू नित अगवाणी सुहावे । ।। १२ ।।
देवता देख छवि माँ हरसे, नयन–चकोर दरश को तरसे । ।। १३ ।।
माँ की महिमा बरणी न जावे, बह्मा–विष्णु–शंकर गावे । ।। १४ ।।
देव–दनुज सब ध्यान लगावे, यक्ष–गन्धर्व सब स्तुति गावे । ।। १५ ।।
चार भुजा पुनि लोचन तीना, भुजबल से सब जग वश कीना । ।। १६ ।।
तू ही बुद्धि बोध–उपजानी, लज्जा तू मर्यादा रखानी । ।। १७ ।।
तू सौम्या असशील स्वभावा, तुम से अधिक न सौम्य दिखावा । ।। १८ ।
दुखियों के तुम दु:ख हर लिना, भक्त जनन को हर सुख दिना । ।। १९ ।।
बिन माँगे सब कुछ मिल जाता, प्रेम भाव से शीश नवाता । ।। २० ।।
खाली झोली भर ले जाता, जो भी माँ के द्वारे आता । ।। २१ ।।
मेवा मिसरी क्षीर अति प्यारी, महाप्रसाद की महिमा न्यारी । ।। २२ ।।
पान पुष्प अरू लुंग सुपारी, हर्षित जन मन देवे त्यारी । ।। २३ ।।
श्री फल प्रेम से भेंट चढाता, मन वांछित फल पल में पाता । ।। २४ ।।
तुम ही दाता तुम ही विधाता, तुम ही खुँखर जीवन दाता । ।। २५ ।।
प्रकट भई तोषीणा माही, पुरा नाम थल से जो जाणी । ।। २६ ।।
रुप लक्ष्मी का धारण कीना, तोषाशाह को धन–बल–दीना । ।। २७ ।।
धूम–धाम लाडो परणाई, भक्त शाह की लाज बचाई । ।। २८ ।।
परचा एक प्रीति को दीना, नयन–ज्योतिमय पल में कीना । ।। २९ ।।
चमत्कार तुमने माँ कीना, कर में दुध सरप पी लीना । ।। ३० ।।
माँ के रूप की महिमा न्यारी, बड़े ध्यान गावे नर–नारी । ।। ३१ ।।

भुत–प्रेत–भैरव–वेताला, अरू कोई दुखद जीव मतवाला । ।। ३३ ।।

पढ़े चालीसा तुरत चली जावे, फिर नहीं कभीं दरस दिखलावे । ।। ३४ ।।

तुम को सुमिरे दु:ख कट जाते, रोग–दोष कभी निकट न आते । ।। ३५ ।

जो नर यह चालीसा गावे, जीवन के दुखड़े मिट जावें । ।। ३६ ।।

ईक्कीस बार पढ़ैं नर कोई, बल–बुद्धि–विवेक सम होई । ।। ३७ ।।

जो जन नित उठ मंगल गावें, भव सागर से पार लगावे । ।। ३८ ।।

धूप–दीप अरू ध्यान लगावें, जन्म मरण बन्धन छुट जावे । ।। ३९ ।।

दोहा

जय–जय खुँखर मैंया, नमो–नमो हर बार ।
लाज राखों माँ भक्त की, हरो पाप का भार ।।

!! प्रेम से बोलो खुँखर माता की जाय !!

स्तुति

बारं बार कही, कही न चित्त दे,
सुनी कहा नींदमे, क्या तू काम लगी भवनमें
या तू लगी ध्यानमे...
क्या तेरी मरजी, हमें है गरजी
देवी भला ध्यान दो सुनलो चित्त लगाय
अब तो किजिये भलो भक्तको
दे दे बुद्धि दे, भवानी धन दे, विद्या बल स्थूल दे,
षटकिर्ती वर दे, समस्त सुख दे, दान सुपात्र दे,
इच्छा भोजन दे, गुरु स्मरण दे, सद्कर्म नित्य दे,
विद्या रस रुचि दे, हरि भजन दे, मैय्या तेरो दर्श दे।

।। बोलो खुंखर माता की जय।।

।। आरती ।।

ॐ जय खुँखर माता, मैया जय खुँखर माता ।
शक्ति – सती महतारी, तुम ही सुख दाता ।।
ॐ जय खुँखर माता .....

बाई प्रभा न सपनों आयों, सपना में दर्श दियों ।
गढ़ तोषीना आकर, सुन्दर भवन चिण्यो ।।
ॐ जय खुँखर माता .....

चन्द्र प्रभा सो मुखडो, चमके ज्यों मोती ।
अंग–अंग अति सुन्दर, ज्यों दिपक ज्योती ।।
ॐ जय खुँखर माता .....

तोषाशाह की मात भवानी, उनको कष्ट हर्यों ।
विपती काल में आकर, सब दु:ख दूर कर्यों ।।
ॐ जय खुँखर माता .....

तुम करूणा की सागर, दया दृष्टि कीजें ।
मन वांछित फल पल मे, सब को माँ दीजें ।।
ॐ जय खुँखर माता .....

धूप–दीप नैवेद्य आरती, हिल–मिल भक्त करें ।
दर्शन कर माता के, जय–जय कार करें ।।
ॐ जय खुँखर माता .....

माँ खुँखरजी की आरती, जो कोई नर गावें ।
भक्त करत निरंजन, सुख सम्पति पावें ।।
ॐ जय खुँखर माता .....

।। खुँखर स्तुति ।।

खुँखर मोरी मैय्या, सुध अति लहैया, भव सागर की नैया ।
दर्श दिखाओं, प्यास बुझाओं, नयनन की मोरी मैया ।।

विद्युत–सम भाषिनी, शौर्य–प्रकाशिनी,
चहु दिशि तम का नाश करें ।
सुर्य–चन्द त्रय, देव इन्द्र सब,
खुँखर की जै–कार करे ।।

नक्षर सेठ तोषाशाह पे खुँखर, कृपा की बरसात करें ।
संकट काटे, विपता नासै, हीरे–मोती थाल भरे ।।

भक्त हरषावे, स्तुति गावे, जो नर माँ खुँखर तेरी ।
मन वांछित फल, पल में देती, जगदम्बा खुँखर मेरी ।।

!! प्रेम से बोलो खुँखर माता की जाय !!

भजन

माताजी प्यारा लागो जी, रुप सुहांणु लागो जी,
हो सिंह पे असवार, आवो खुँखर माँ ... ।

माथे उपर मुकूट सुहाणू, केसरिया मन भाव जी ।
चम–चम चमके थारो मुकूटो, उजियारो हो जाव जी ।

चाँद–सुरज शरमाव जी –
देख–देख भरमाव जी । हो सिंह..... ।

केसर चन्दन तिलक सुहाव, कानम कुण्डल चमक जी,
प्यारी–प्यारी सुरत थाँकी, सुरज जिंया चमक जी
गल पुष्पन की माला जी,
हीरा–मोती वाला जी । हो सिंह..... ।

हाथ में तलवार थाके, दुष्टन मार गिरावो जी ।
महान संकट घेर लिया है, जास्यु पिंड छुडावो जी ।
भक्ता का रखवाला जी
लाज बचावण वाला जी । हो सिंह..... ।

तोषीणा म धाम तिहारो, भारी मेलो लाग जी
नवरात्रा में भीड़ भरीजे, दुनिया दर्शन पाव जी,

श्री दुर्गा चालीसा

नमो नमो दुर्गे सुखकरनी । नमो नमो अम्बे दुखहरनी ।।
निरंकार है ज्योति तुम्हारी । तिहूँ लोक फैली उजियारी ।।
शशि लिलाट मुख महाविशाला । नेत्र लाल भृकुटी विकराला ।।
रूप मातु को अधिक सुहावे । दरश करत जन अति सुखपावे ।।
तुम संसार शक्ति लय कीना । पालन हेतु अन्न धन दीना ।।
अन्नपूर्ण हुई जग पाला । तुम ही आदि सुन्दरी बाला ।।
प्रलयकाल सब नाशक हारी । तुम गौरी शिव शंकर प्यारी ।।
शिव योगी तुम्हारे गुण गावै । ब्रह्मा विष्णु तुम्हे नित धावें ।।
रुप सरस्वती को तुम धारा । दे सुबध्दि ऋषि मुनिन उबारा ।।
धरा रूप नरसिंह को अम्बा । परगट भई फाड़ कर खम्बा ।।
रक्षा करि प्रहलाद बचायो । हिरणाकुश को स्वर्ग पठायो ।।
लक्ष्मी रुप धरो जग माही । श्री नारायण अंग समाहीं ।।
क्षीरसिंधु में करत विलासा । दयासिंधु दीजै मन आसा ।।
हिंगलाज में तुम्हीं भवानी । महिमा अमित न जात बखानी ।।
मातंगी ओट धूमावती माता । भुवनेश्वरी बगला सुख दाता ।।
श्री भैरव तारा जग तारिणी । क्षिन्न भाल भव दुंख निवारिणी ।।
केहरि वाहन सोह भवानी । लंगुर बीर चलत अगवानी ।।
कर में खप्पर खड़ग विराजै । जाको देख काल डर भाजै ।।
सोहै अस्त्र और त्रिशूला । जाते उठत शत्रु हित शूला ।।
नगरकोट में तुम्ही विराजत । तिहूँ लोक में डंका बाजत ।।
शुम्भ निशुम्भ दानव तुम मारे । रक्त बीज शंखन संहारे ।।

महिषासुर नृप अति अभिमानी। जेहि अध भार मही अकुलानी।।
रूप कराल काली को धारा । सेन सहित तुम तिहि संहारा।।
परी गाढ़ सन्तन पर जब जब । भई सहाय मातु तुम तब तब।।
अमर पूरी औरों सब लोका । तव महिमा सब रहै अशोका।।
ज्वाला में है ज्योति तुम्हारी । तुम्हें सदा पूजे नरनारी।।
प्रेम भक्ति से जो जस गावे । दुःख दारिद्र निकट नहीं आवे।।
ध्यावे तुम्हें जो नर मन लाई । जन्म मरण ताको छुटि जाई।।
जोगी सुर-मुनि कहत पुकारी । योग न हो बिन शक्ति तुम्हारी।।
शंकर आचारज तप कीनो । काम - क्रोध जीति सब लीनो।।
निशिदिन ध्यान धरो शंकर को । काहु काल नहि सुमिरो तुमको।।
शक्ति रुप को मरम न पायो । शक्ति गई तब मन पछिताओ।।
शरणागत हुई कीर्ति बखानी । जय जय जय जगदंब भवानी।।
भई प्रसन्न आदि जगदंबा । दई शक्ति नहीं कीन विलंबा।।
मोको मातु कष्ट अति घेरो । तुम बिन कौन हरे दुःख मेरो।।
आशा तृष्णा निपट सतावे । मोह मदादिक सब बिनशावें।।
शत्रु नाश कीजे महारानी । सुमिरौ इकचित तुम्हें भवानी।।
करो कृपा हे मातु दयाला । ऋध्दि सिध्दि दे कराहु निहाला।।
जब लागे जियौं दयाफल पाऊँ । तुम्हरौ जस मैं सदा सुनाऊँ।।
दुर्गा चालीसा जो कोई गावैं । सब सुख भोग परम पद पावैं।
देवीदास शरण निज जानी । करहु कृपा जगदंबा भवानी।।

।। प्रभु प्रार्थना ।।

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःस्वभाग्भवेत् ।।

सब का भला करो भगवान् । सब पर दया करो भगवान् ।
सबको दो भक्ति का दान । सबका सब विधि हो कल्याण ।।
सब वेद पढ़ें सुविचार बढ़ें, बल पाय चढ़े नित ऊपर को ।
अविरुद्ध रहें, ऋजु-पन्थ गहें, परिवार गहें वसुधा भर को ।।
ध्रुव धर्म धरें पर दुःख हरें, तन त्याग तरें भवसागर को ।
दिन फेरे पिता वर दे सविता, हम आर्य करें भू-मण्डल को ।।

।। श्री सदगुरुजी की आरती ।।

जय जय सदगुरु, दीनदयाल, दरश से हरष भयो,
हरष भयो आनंद भयोजी, जय... जय...
सदगुरु दीनदयाल, दरश से हरष भयो ।।

लाखों जन्म करे तब जाके, तब पाये महाराज
धन्य भरे हम आज मिले है, सिद्ध भरे सब काज ।।
दरश से हरष भयोजी ।। जय... जय... सदगुरु
किस विध महिमा गांऊ तुम्हारी, भानू न पहुंचियो जाय,
तन, मन, धन से करु आरती, हृदय बीच बसाई
दरश से हरष भयोजी ।। जय... जय... सदगुरु
चौदह भुवन प्रकाश तुम्हारा, ध्वजा खडी चौधाम,
स्वर्ग, मृत्यु, पाताल तिहूँ से, आप ही हो उपराम ।।
दरश से हरष भयोजी ।। जय... जय... सदगुरु
लुट गयो अग्यान अंधेरो, छायो बोध प्रकाश,
रुप तुम्हारो नजर में भायों, पाप भये सब नाश ।।
दरश से हरष भयोजी ।। जय... जय... सदगुरु
ये तन थाल नयन की भाति, तार सदा उजियार,
तुकड़ियादास दरश का भुखा, यही पद हरदम गाय ।।

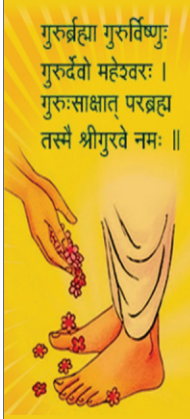

।। ऐ मेरे गुरुदेव ।।

हे मेरे गुरुदेव करुणा सिंधु करुणा कीजीए
हुँ अघम आधीन अशरण, अब शरण में लीजीए ।। धृ ।।
मुझ में है जप तप न साधन और नही कुछ ज्ञान है
अज्ञानता है एक बाकी और बस अभिमान है ।। १ ।।
खा रहा गोते हुँ मैं भवसींधु के मझधार में
आसरा है दुसरा कोई न अब संसार में ।। २ ।।
पाप बोझ से लदी नैया, भँवर मे जा रही
नाथ दौडो और बचावो अब तो डुबी जा रही ।। ३ ।।
आप भी यदी सुधी न लोगे फिर कहाँ जाऊँगा मैं
जन्म दुःख से नाव कैसे पार कर पाऊंगा मैं ।। ४ ।।

कुलदेवी माँ खुँखार

तोतला एवं तोष्णीवाल परिवार की कुल माता खुँखर

तोतला वंश उत्पती

श्री तोलोजी चहुवाण (चौहाण) से तोतला कहलाया।

गोत्र – कपिलांस
माता – कुलदेवी माँ खुँखार
उपखाप – तोतला, वडकहा, नागला, पटवारी।

तोष्णीवाल (तोसणीवाल) वंश उत्पती

श्री तेजसी चहुवाण (चौहाण) से तोष्णीवाल कहलाया ।

गोत्र – कौसिक
माता – कुलदेवी माँ खुँखार, सति बांवर्ल
उपखाप – तोसणीवाल, नागौरी, मिज्याजी, मौदी, तेवर, कोठारी, कामा, डामडी, लंबू, सिंगी, दास, दगा, झलग्या, चेनाग्या, मुंजी, भाकरौद्या ।

।। नव दुर्गा ।।

।। शैलपुत्री ।।

वन्दे वाञ्छितलाभाय चन्द्रार्धकृतशेखराम् ।
वृषारूढां शूलधरां शैलपुत्रीं यशस्विनीम् ।।

माँ दुर्गा अपने पहले स्वरूपमें 'शैलपुत्री' के नामसे जानी जाती हैं । पर्वतराज हिमालयके यहाँ पुत्रीके रूपमें उत्पन्न होनेके कारण इनका यह 'शैलपुत्री' नाम पड़ा था । वृषभ-स्थिता इन माताजीके दाहिने हाथमें त्रिशुल

।। ब्रह्मचारिणी ।।

दधाना करपाद्माभ्यामक्षमालाकमण्डलू ।
देवी प्रसीदतु मयि ब्रह्मचारिण्यनुत्तमा ।।

माँ दुर्गाकी नव शक्तियोंका दूसरा स्वरूप ब्रह्मचारिणीका है । यहाँ 'ब्रह्म' शब्दका अर्थ तपस्या है । ब्रह्मचारिणी अर्थात् तपकी चारिणी-तपका आचरण करनेवाली । कहा भी है — वेदस्तत्त्वं तपो ब्रह्म—वेद, तत्त्व और तप 'ब्रह्म' शब्दके अर्थ हैं । ब्रह्मचारिणी देवीका स्वरूप पूर्ण ज्योतिर्मय एवं

।। चन्द्रघण्टा ।।

पिण्डजप्रवरारूढा चण्डकोपास्त्रकैर्युता ।
प्रसादं तनुते मह्यं चन्द्रघण्टेति विश्रुता ।।

माँ दुर्गाजीकी तीसरी शक्तिका नाम 'चन्द्रघण्टा' है । नवरात्रिउपासनामें तीसरे दिन इन्हींके विग्रहका पूजन-आराधन किया जाता है । इनका यह स्वरूप परम शान्तिदायक और कल्याणकारी है । इनके मस्तकमें घण्टेक आकारका अर्धचन्द्र है, इसी रंग स्वर्णके समान चमकीला है । इनके दस हाथ है । इनके दसों हाथमें खड्ग आदि शस्त्र तथा बाण आदि अस्त्र विभूषित हैं । इनका वाहन सिंह है । इनकी मुद्रा युद्धके लिये उद्यत रहनेकी होती है । इनके घण्टेकी-सी भयानक चण्डध्वनिसे अत्याचारी दानव-दैत्य-राक्षस सदैव प्रकम्पित रहते हैं ।

।। कूष्माण्डा ।।

सुरासम्पूर्णकलशं रुधिराप्लुतमेव च ।
दधाना हस्तपद्माभ्यां कूष्माण्डा शुभदास्तु मे ।।

माँ दुर्गाजीके चौथे स्वरूपका नाम 'कूष्माण्डा' है । अपनी मन्द, हलकी हँसीद्वारा अण्ड अर्थात् ब्रह्माण्डको उत्पन्न करनेके कारण इन्हें कूष्माण्डा देवीके नामसे अभिहित किया गया है । जब सृष्टिका अस्तित्व नहीं था, चारों ओर अन्धकार-ही-अन्धकार परिव्याप्त था, तब इन्हीं देवीने अपने 'ईषत्' हास्यसे ब्रह्माण्डकी रचना की थी । अत: यही सृष्टिकी आदि-स्वरूपा, आदि शक्ति हैं । इनके पूर्व ब्रह्माण्डका अस्तित्व था ही नहीं ।

।। स्कन्दमाता ।।

सिंहासनगता नित्यं पद्माश्रितकरद्वया ।
शुभदास्तु सदा देवी स्कन्दमाता यशस्विनी ।।

माँ दुर्गाजीके पाँचवे स्वरूपको स्कन्दमाताके नामसे जाना जाता हैं । ये भगवान् स्कन्द 'कुमार कार्त्तिकेय' नामसे भी जाने जाते हैं । ये प्रसिद्ध देवासुर–संग्राममें देवताओंके सेनापति बने थे । पुराणोंमें इन्हें कुमार और शक्तिधर कहकर इनकी महिमाका वर्णन किया गया है । इनका वाहन मयूर है । अत: इन्हें मयूरवाहनके नामसे भी अभिहित किया गया है ।

।। कात्यायनी ।।

चन्द्रहासोज्ज्वलकरा शार्दूलवरवाहना ।
कात्यायनी शुभं दद्याद्देवी दानवघतिनी ।।

माँ दुर्गाके छठवें स्वरूपका नाम 'कात्यायनी' है । इनका कात्यायनी नाम पड़नेकी कथा इस प्रकार हैं — कत नामक एक प्रसिद्ध महर्षि थे । उनके पुत्र ऋषि कात्य हुए । इन्हीं कात्यके गोत्रमें विश्वप्रसिद्ध महर्षि कात्यायन उत्पन्न हुए थे । इन्होंने भगवती पराम्बाकी उपासना करते हुए बहुत वर्षोंतक बड़ी कठिन तपस्या की थी । उनकी इच्छा थी कि माँ भगवती उनके घर पुत्रीके रूपमें जन्म लें । माँ भगवतीने उनकी यह प्रार्थना स्वीकार कर ली थी ।

।। कालरात्रि ।।

एकवेणी जपाकर्णपूरा नग्ना खरास्थिता ।
लम्बोष्ठी कर्णिकाकर्णी तैलाभ्यक्तशरीरिणी ।।
वामपादोल्लसल्लोहलताकण्टकभूषणा ।
वर्धनमूर्धध्वजा कृष्णा कालरात्रिर्भयङ्करी ।।

माँ दुर्गाजीकी सातवीं शक्ति 'कालरात्रिके' नामसे जानी जाती हैं । इनके शरीराका रंग घने अन्धकारकी तरह एकदम काला है । सिरके बाल बिखरे हुए हैं । गलेमें विद्युत्की तरह चमकनेवाली माला हैं । इनके तीन नेत्र हैं । ये तीनों नेत्र ब्रह्माण्डके सदृश गोल हैं । इनसे विद्युत्के समान चमकीली किरणें नि:सृत होती रहती हैं । इनकी नासिकाके श्वास प्रवाससे अग्निकी भयङ्कर ज्वालाएँ निकलती रहती हैं । इनका वाहन गर्दभ––—गदहा हैं । ऊपर उठे हुए दाहिने हाथकी वरमुद्रासे सभीको वर प्रदान करती हैं । दाहिनी तरफका नीचेवाला हाथ अभयमुद्रामें हैं । बायीं तरफके ऊपरवाले हाथमें लोहेका काँटा तथा नीचेवाले हाथमें खड्ग (कटार) हैं । माँ कालरात्रिका स्वरूप देखनेंमें अत्यन्त भयानक है, लेकिन ये सदैव शुभ फल ही देनेवाली हैं । इसी कारण इनका एक नाम 'शुभङ्करी' भी है ।

।। महागौरी ।।

श्वेते वृषे समारूढा श्वेताम्बरधरा शुचिः ।
महागौरी शुभं दद्यान्महादेवप्रमोददा ।।

माँ दुर्गाजीकी आठवीं शक्तिका नाम 'महागौरी' है । इनका वर्ण पूर्णतः गौर है । इस गौरताकी उपमा शङ्ख, चन्द्र और कुन्दके फूलसे दी गयी है । इनकी आयु आठ वर्षकी मानी गयी हैं — 'अष्टवर्षा भवेद् गौरी' इनके समस्त वस्त्र एवं आभूषण आदि श्वेत हैं । इनकी चार भुजाएँ हैं । इनका वाहन वृषभ है । इनके ऊपरवाले बायें हाथमें डमरू और नीचेके बायें हाथमें वर–

।। सिद्धिदात्री ।।

सिद्धगन्धर्वयक्षाद्यैरसुरैरमरैरपि
सेव्यमाना सदा भूयात् सिद्धिदा सिद्धिदायिनी ।।

माँ दुर्गाजीकी नवीं शक्तिका नाम सिद्धिदात्री है । ये सभी प्रकारकी सिद्धियोंको देनेवाली हैं । मार्कण्डेयपुराणके अनुसार अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व–ये आठ सिद्धियाँ

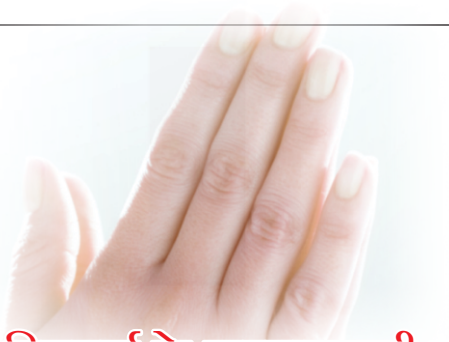

दैनिक दिनचर्या के कल्याणकारी मन्त्र

प्रात: काल उठते ही – निम्न श्लोक के साथ कर दर्शन करना चाहिये ।

कराग्रे वसते लक्ष्मी: कर मध्ये सरस्वती ।
करमूले च गोविन्द: प्रभाते कर दर्शनम् ।।

कुल माता की प्रार्थना –

या देवी सर्वभूतेषु, खुँखर रूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नम: ।।

प्रात: काल उठकर जमीन पर पै रखने के साथ – निम्न श्लोक पढ़ें ।

समुद्र वसने देवी पर्वतस्तन मण्डले ।
विष्णु पत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्श क्षमस्व मे ।।

स्नान करते समय – निम्न श्लोक का उच्चारण करें ।

वक्रतुण्ड महाकाय कल्पान्तदहनोपम ।
भैरवाय नमस्तुभ्यं ह्मनुज्ञां दातुमर्हसि ।।
गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती ।
नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेऽस्मिन सन्निधिं कुरू ।।

भोजन करने से पहले –

अन्नपूर्णे सदापूर्णे शंकर प्राण बल्लभे ।
ज्ञानवैराज्ञ सिद्ध्यर्थं भिक्षां देहि च पार्वति ।।

रात्रि में शयन से पहेले –

अच्युतं केशवं विष्णुं हरि सोमं जनार्दनम् ।
हसं नारायणं कृष्णं जपते दु:स्वप्नाशान्तये ।।

सब समय के लिये महामन्त्र –

श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारे हे नाथ नारायण वासुदेव ।

आरती श्री गणेश जी की

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पारवती, पिता महादेवा ।।

पान चढ़े फूल चढ़े और चढ़े मेवा ।
लड्डुअन को भोग लगे, सन्त करे सेवा ।। जय. ।।
एकदन्त दयावन्त, चार भुजाधारी।
मस्तक सिंदूर सोहे, मूसे की सवारी ।। जय. ।।
अन्धन को आँख देत, कोढ़िन को काया।

बाँझन को पुत्र देत, निर्धन को माया।। जय. ।।
विघ्न-हरण मंगल-करण, काटत सकल कलेस।
सबसे पहले सुमरिये गौरीपुत्र गणेश।। जय. ।।
दीनन की लाज राखो शम्भु सुतावाटी।
कामना को पूरा करो जाऊँ बलिहारी ।। जय.।।

आरती श्री हनुमान जी की

आरती कीजै हनुमान लला की , दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ।।
जाके बल से गिरिवर कांपे, रोग दोष जाके निकट न झाँके ।।
अंजनिपुत्र महा बलदाई , सन्तन के प्रभु सदा सहाई ।।
दे बीरा रघुनाथ पठाये , लंका जारि सीयसुधि लाये ।।
लंका सो कोट समुद्र सी खाई, जात पवनसुत बार न लाई ।।
लंका जारि असुर संहारे , सीतारामजी के काज सँवारे ।।
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे, लाय सँजीवन प्रान उबारे ।।
पैठि पताल तोरि जम-कारे , अहिरावन की भुजा उखारे ।।
बायें भुजा असुरदल मारे , दाहिने भुजा संतजन तारे ।।
सुर नर मुनि आरती उतारें, जय जय जय हनुमान उचारें ।।
कंचन थाल कपूर लौ छाई, आरती करत अंजना माई ।।

आरती श्री शिवजी की

कर्पुर गौरं करुणावतारं, संसारसारं भुजगेन्द्र हारम् ।
सदा वसंतं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि ।।
ओम् जय शिव ओंकारा, हो प्रभू हर भज ओंकारा ।
हो शिव पार्वती के प्यारा, हो शिव शिश गंगाधारा ।
हो शिव बेल चढन वाला, हो शिव गल मुंडन माला ।
हो शिव विजया में मतवाला, हो बाबा भूरि जटा वाला ।।
जटा में गंग विराजत उपर जलधारा ।। ॐ हर हर हर महादेव
एकानन् चतुरानन, पंचानन राजै ।
हंसासन गरुडासन, वृषवाहन साजै ।। ॐ हर हर हर महादेव
दोय भुज चार चतुर्भुज दश भुज ते सोहै ।
तीनों रुप निरखता त्रिभुवन जन मोहै ।। ॐ हर हर हर महादेव
अक्ष माला वनमाला रुण्ड माला धारी ।
त्रिपुरारीस मुरारी । भोले भोले नाथ मुरारी कर कमलाधारी ।। ॐ हर हर हर महादेव
श्वेतांबर पीतांबर, वाघ्राम्बर अंगे ।
सनकादिक प्रभुतादिक, देवादिक संगे ।। ॐ हर हर हर महादेव
कर मध्येसु कमण्डलु चक्र, त्रिशुल धर्ता ।
सुख कर्ता दु:ख हर्ता, जगपालन कर्ता ।। ॐ हर हर हर महादेव
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका ।
प्रणवाक्षर ॐ मध्ये ये तीनो एका ।। ॐ हर हर हर महादेव
लक्ष्मी वर गायत्री पार्वती संगे ।
अर्ध्दांगी गायत्री शिवगौरा संगे ।। ॐ हर हर हर महादेव
काशी में विश्वनाथ विराजत नन्दो ब्रह्मचारी ।
नित उठ भोग लगावत महिमा अति भारी ।। ॐ हर हर हर महादेव
त्रिगुणात्मक स्वामी की आरती जो कोई नर गावे ।
कहत शिवानन्द स्वामी, इच्छा फल पावे ।। ॐ हर हर हर महादेव

आरती श्री अम्बा जी की

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवजी ।। जय अम्बे ।।

मांग सिन्दूर विराजत, टीको मृगमद को।
उज्वल से दोउ नयना, चन्द्र वदन नीको ।। जय अम्बे ।।

कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै।
रक्त पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजै ।। जय अम्बे ।।

केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी।
सुर नर मुनि जन सेवत, तिनके दुख हारी ।। जय अम्बे ।।

कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर, राजत सम ज्योति ।। जय अम्बे ।।

शुम्भ-निशुम्भ विदारे, महिषासुर घाती।
धूम्रविलोचन नयना, निशिदिन मदमाती ।। जय अम्बे ।।

चण्ड-मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे।
मधु कैटभ दोउ मारे, सुर-भयहीन करे ।। जय अम्बे ।।

ब्रह्माणी रूद्राणी, तुम कमला रानी।
आगम-निगम बखानी, तुम शिव पटरानी ।। जय अम्बे ।।

चौसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरों।
बाजत ताल मृदंग और बाजत डमरू ।। जय अम्बे ।।

तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता।
भक्तन की दुख हरता, सुख सम्पत्ति करता ।। जय अम्बे ।।

भुजा चार अति शोभित, वर-मुद्रा धारी।
मनवांछित फल पावत, सेवत नर-नारी ।। जय अम्बे ।।

कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती।
मालकेतु में राजत, कोटी रतन ज्योति ।। जय अम्बे ।।

माँ अम्बे जी की आरती, जो कोई नर गावै ।

आरती श्री लक्ष्मी जी की

जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशि दिन सेवत हरी विष्णु विधाता ।। टेक।।

उमा, रमा, ब्रह्माणी, तू ही हैं जग माता।
सूर्य चन्दमा ध्यावत नारद ऋषि गाता ।। जय लक्ष्मी...

दुर्गा रुप निरंजन सुख सम्पति दाता।
जो कोई तुमको ध्यावत ऋध्दि सिध्दि धन पाता ।। जय लक्ष्मी...

तुम पाताल निवासिनी तुम ही शुभदाता।
कर्म प्रभाव प्रकाशिनी भवनिधि की त्राता ।। जय लक्ष्मी...

जिस घर तुमरो वासा ते हि मे सदगुण आता।
सब सम्भव हो जाता मन नहिं घबड़ाता ।। जय लक्ष्मी...

तुम बिन यज्ञ न होवे वस्त्र नहीं जुट पाता।
खान-पान का वैभव सब श्रीपद से आता ।। जय लक्ष्मी...

शुभ गुण सुन्दर मुक्ता क्षीर निधि जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन कोई नहीं पाता ।। जय लक्ष्मी...

लक्ष्मी जी की आरती जो कोई नर गाता।
उर आंनद अति उपजे अरु पाप उतर जाता ।। जय लक्ष्मी...

ओ३म् जय जगदीश हरे

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे,
भक्त जनन के संकट, छिन में दूर करे ।। ॐ ।।
जो ध्यावे फल पावे, दु:ख बिनसे मन का ।। प्रभु ।।
सुख–सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का ।। ॐ ।।
मात–पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी ।। प्रभु ।।
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी ।। ॐ।।
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी ।। प्रभु ।।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ।। ॐ ।।
तुम करूणा के सागर, तुम पालन कर्ता ।। प्रभु ।।
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता ।। ॐ ।।
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति ।। प्रभु ।।
किस विधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमति ।।
ॐ ।।
दीन बन्धु दु:ख हरता, तुम रक्षक मेरे ।। प्रभु ।।
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे ।। ॐ
।।
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा, ।। प्रभु ।।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा ।। ॐ

आरती श्री कुंजबिहारी जी की

आरती कुंजबिहारी की । श्रीगिरधर कृष्णमुरारी की ।। टेक ।।
गले में बैजंतीमाला, बजावै मुरलि मधुर बाला ।
श्रवन में कुण्डल झलकाता, नंद के आनन्द नन्दलाला
।। श्रीगिरधर ।।
गगन सम अंग कांति काली, राधिका चमक रही आली,
लतन में ठाढ़े बनमाली,
भ्रमर–सी अलक, कस्तूरी–तिलक, चन्द्र–सी झलक,
ललित छबि स्यामा प्यारी थी । श्रीगिरधर कृष्णमुरारी की ।।
कनकमय मोर–मुकुट बिलसै, देवता दरसनकों तरसै,
गगन सों सुमन रासि बरसै,
बजे मुरचंग मधुर मिरदंग, ग्वालिनी संग,
अतुल रति गोपकुमारीकी । श्रीगिरधर कृष्णमुरारी की ।।
जहाँ ते प्रगट भई गंगा, सकल–मल–हारिणि श्रीगंगा,
स्मरन ते होत मोह–भंगा,
बसी सिव सीस, जटाके बीच, हरै अघ कीच,
चरन छबि श्रीबनवारीकी । श्रीगिरधर कृष्णमुरारी की ।।
चमकती उज्ज्वल तट रेनू, बज रही बृन्दावन बेनू,
चहूँ दिसि गोपि ग्वाल धेनू,
हँसत मृदु मंद, चाँदनी चंद, कटत भव–फंद,
टेर सुनु दीन दुखारीकी । श्रीगिरधर कृष्णमुरारी की ।।
आरती कुंजबिहारीकी । श्रीगिरधर कृष्णमुरारी की ।।

आरती श्री सत्यनारायणजी की

जय श्री लक्ष्मीरमणा, जय श्री लक्ष्मीरमणा।
सत्यनारायण स्वामी, जन–पातक–हरणा ।। जय ।।
रत्न जटित सिंहासन, अद्‌भुत छवि राजै।
नारद करत निराजन, घण्टा ध्वनि बाजै ।। जय ।।
प्रकट भये कलिकारण, द्विज को दर्श दियो।
बूढ़ो ब्राह्मण बनके, कंचन महल कियो ।। जय ।।
दुर्बल भील कठारो, जिन पर कृपा करी।
चन्द्रचूड़ एक राजा, जिनकी विपत्ति हरी ।। जय ।।
वैश्य मनोरथ पायो, श्रद्दा तज दीन्हीं ।
सो फल भोग्यो प्रभुजी, फिर अस्तुति कीन्हीं ।। जय ।।
भाव–भक्ति के कारण, छिन–छिन रूप धरयो
श्रद्धा धारण कीनी, तिनको काज सरयो ।। जय ।।
ग्वाल–बाल संग राजा, बन में भक्ति करी ।
मनवांछित फल दीन्हों, दीनदयालु हरी ।। जय ।।
चढ़त प्रसाद सवायो, कदली फल मेवा ।
धूप दीप तुलसी से, राजी सत्यदेवा ।। जय ।।
श्री सत्यनारायण जी की आरती जो कोई नर गावे ।
कहत शिवानन्दस्वामी मनवांछित फल पावे ।। जय ।।

आरती श्री रामदेवबाबा की

पिछम दिसासु म्हारा पीरजी पधारिया, घर अजमल अवतार लियो ।।१।।

लांछाबाई सुगणाबाई करे हरकी आरती, हरजीओ भाटी चंवर ढुळे,

खम्मा खम्मा खम्मा रे कंवर अजमलरा, अंदातारो पार नई पावा जीओ,

खम्मा म्हारा बापजीने सारो जुग ध्यावे, अजमलजी रा कँवरारो भेद नहि पावे,

द्वारकारा नाथ थाने सारो जुग ध्यावे, जैसी ज्यारी भावना वैसो फल पावे ।।धृ।।

बिणारे तंदुरा धणीरे नौबत बाजे, झालर री झणकार पडे ।।

गंगा रे जमुना बह रे सरस्वती, रामदेवजी बाबो स्नान करे ।।

घीरत मिठाई हरि रे चढत चुरमो, धुपारी मंहकार पडे ।।

दुरारे देश रा बाबा आवे थारे जातरु, दरगा आगे बापजीने नमन करे ।।

हरि शरणामें भाटी हरजी रे बोलिया, नवोरे खंडो में निशान फिरे ।।

छोटा मोटा टाबरिया पीरजी पुकारियाँ, मोटोडा तो रामदेवजी केवे जीओ ।।

आंधळाने आंख्या देवे, पांगळाने पाँव देवे, कोढीयाँ रा कोढ मिटाय जीओ ।।

बाबा दुखीयॉरा दु:ख मिटाय सरे, शरणें आयोडारों काम लगाय सरे ।।

बाबा बांझीयाने पुत्र दिलाय सरे ।। लांछाबाई सुगणाबाई करे हरकी आरती

।। दर्शनीय स्थल ।।

नागौर जिले की डीडवाना (उपकाशी) तहसील से महज २८ कि.मि. दुरी पर स्थित तोषीणा कस्बे के रूप में विकासशील है । पौराणिक दन्त कथाओं से ज्ञात होता है कि इसका प्राचीन नाम थल था । सेठ तोषाशाह तोषनीवाल के ११३९ ई. में आगमन के पश्चात इस गाँव का नाम तोषीणा पड़ा । यहाँ स्थित प्राचीन दर्शनीय स्थलों का अपना–अपना महत्व है, कोई अपनी प्राचीनता के लिए जाना जाता है, तो कोई अपनी भव्यता के लिए ।

यहाँ के दर्शनिय स्थलों में श्री कल्याणराजजी का प्राचीन, मंदिर, सत्यनारायण भगवान का मंदिर, शनिदेव का नवग्रह मंदिर, खुँखर माता, जगदम्बा, शिव परिवार व बालाजी का मंदिर, ऐतिहासिक छतरियाँ, श्री कृष्ण गौपाल गौशाला, मानुधणी सती माता मंदिर इत्यादि सम्मिलित है ।

कल्याणजी महाराज का मन्दिर

डिग्गी पुरी के राजा कल्याणजी महाराज का मन्दिर अपनी प्राचीनता के लिए जाना जाता है । इन मन्दिर की स्थापना १६ वीं सदी के लगभग बताई जाती है । ४०० वर्ष प्राचीन इस मन्दिर में डिग्गी पूरी के राजा की प्रतिमा काले प्रस्तर से निर्मित है । जो युगल छवि के साथ विराजित है, भक्तों को सौन्दर्य रूपी अमृत पिला रहे है । उनकी हनू (ठोडी) पे लगा हिरा उनके सौन्दर्य में चार चाँद लगाता है । हर वर्ष जन्माष्टमी के पर्व पर मन्दिर प्राङ्गण में बाल गोपाल की मन मोहक झाँकियों का आयोजन होता है ।

छतरियाँ व माँ सती – (मनचावती)

तोषीणा कस्बे के मध्य में प्राचीन ऐतिहासिक छतरियाँ स्थित है, जो अपनी ऐतिहासिकता व भव्यता के लिए प्रसिद्ध है । जो चौहान वंश के राजाओं की है । इसके मध्य में माँ सती की सफेद प्रस्तर की प्रतिमा विराजित है ।

इतिहास में अनेक सतियों का नाम सुना है, जो अपनी पति की धधकती चिता में अपने प्राणों को न्यौछावर कर दिया । लेकिन एक ऐसी माँ जिसने अपने पुत्र के चिता में स्वयं को धकेल दिया । अपने मृत पुत्र को गोद में लेकर अग्नि में प्रवेश करने से इनका नाम माँ सती पड़ा ।

श्री कृष्ण गोपाल गौशाला

ग्राम तोषीणा के गो भक्तों ने गौ–सेवा का बीड़ा उठाया तथा एक अस्थायी गौशाला की स्थापना की । शनै–शनै इस पुण्य के कार्य में क्षेत्र वासियों का सहयोग मिलने लगा । गौ माता की सेवा के लिए गौशाला की स्थापना की गयी खुँखर माता की प्रेरणा से भामाशाह सेठ श्री भगवानदासजी तोतला जलगाँव निवासी ने गौ माता के कक्षों का निर्माण करवाया । गोपाष्टमी का उत्सव प्रतिवर्ष धुमधाम से मनाया जाता है गौशाला की ३० बिघा गोचर जमीन से हरा गोचारा उपलब्ध कराया जाता है। प्रति अमावस्या के दिन गौ–माता के लिये दलिया (लापसी) बनाया जाता हैं । गौशाला का

मानुधणी सती माता मंदिर

यहाँ पर ठाकुर सुजानसिंहजी के खेत मे मानुधणी सती माता की शीला स्थापीत है। जिसका अभी एक छत्री के रुप मे मंदिर का निर्माण किया गया है। अैसी मान्यता है कि माता की पूजा से मस्से की बीमारी दूर हो जाती है तथा पुत्र प्राप्ती के लिये माता के अनेक अनुभव आये है। यहाँ मानुधणी परिवार के लोग जात जडुला उतारने आते है।

शनि व नवग्रह मन्दिर

श्री कृष्ण गोपाल गौशाला के समीप छोटी खाटु मार्ग पर भगवान श्री शनिदेव व नवग्रह का भव्य मन्दिर का जीर्णोद्धार सेठ श्री सत्यनारायणजी गुप्ता व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती शकुन्तलादेवी गुप्ता निवासी करोड़ा जिला केथली हरियाणा ने भगवान श्री शनिदेव की प्रेरणा से करवाया ।

अनेक विद्वजनों के सानिध्य में २५/०२/२०११ को भगवान श्री

तोषीणा पहुंचने के लिए मार्ग

१. जयपुर से जोबनेर, नावा, कुचामन
होते हुए तोषीणा – १६० कि.मी.

२. जयपुर से परबतसर, कीसनगढ, कुचामन
होते हुए तोषीणा – २३० कि.मी.

३. अजमेर से किसनगढ, परबतसर, कुचामन
होते हुए तोषीणा – १३० कि.मी.

४. मकराणा से तोषीणा – ३५ कि.मी.

५. सालासर से लाडनु, डिडवाना से तोषीणा – १०० कि.मी.

६. सालासर से मेठडी, गिनडी, डिडवाना से तोषीणा – ७० कि.मी.

७. बिकानेर से नागौर, छोटी खाटु से तोषीणा – २२० कि.मी.

८. जोधपुर से नागौर, छोटी खाटु से तोषीणा – २३० कि.मी.

९. पुष्कर से डेगाना, छोटी खाटु से तोषीणा – १३० कि.मी.

१०. रामदेवरा से तलोटी, नागौर, छोटी खाटु से तोषीणा – ३३५ कि.मी.

मंदिर – फोन. ०१५८०–२४२२१७

संपर्क

व्यवस्थापक –

श्री नंदकिशोरजी हुरकट

मो. ०९९८२१७०३३१

अधिक जानकारी हेतु

अध्यक्ष –

श्री भगवानदासजी तोतला, जलगांव

मो. ०९८२३२०६५८८

Follow us on Facebook

khunkharmataji pariwar